रिमझिम करती बारिश आई

एक अफ्रीकी लोककथा

रिमझिम करती बारिश आई : (ब्रिंगिंग रेन टू कापिटी प्लेन से प्रेरित)
प्रस्तुति : अरविन्द गुप्ता

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : अविनाश देशपांडे
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

चतुर्थ संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपये

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जन वाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गांव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block Saket,
New Delhi - 110017
Phone : 26569943, Fax : 26569773,
Email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset, New Delhi - 110018

रिमझिम करती बारिश आई

(एक अफ्रीकी लोककथा)

अफ़्रीका के एक कोने में
बड़ा सा एक मैदान
रिमझिम बारिश की बूंदे
फूंकें उसमें जान

हरी घास में पूरे दिन भर
पक्षी खेला करते
बड़े चाव से हरी पत्तियां
सभी जानवर चरते

ऊंचे पेड़ों के पत्तों को
खा जाते जिराफ़
और जानवर गाय–मवेशी
दिनभर चरते घास

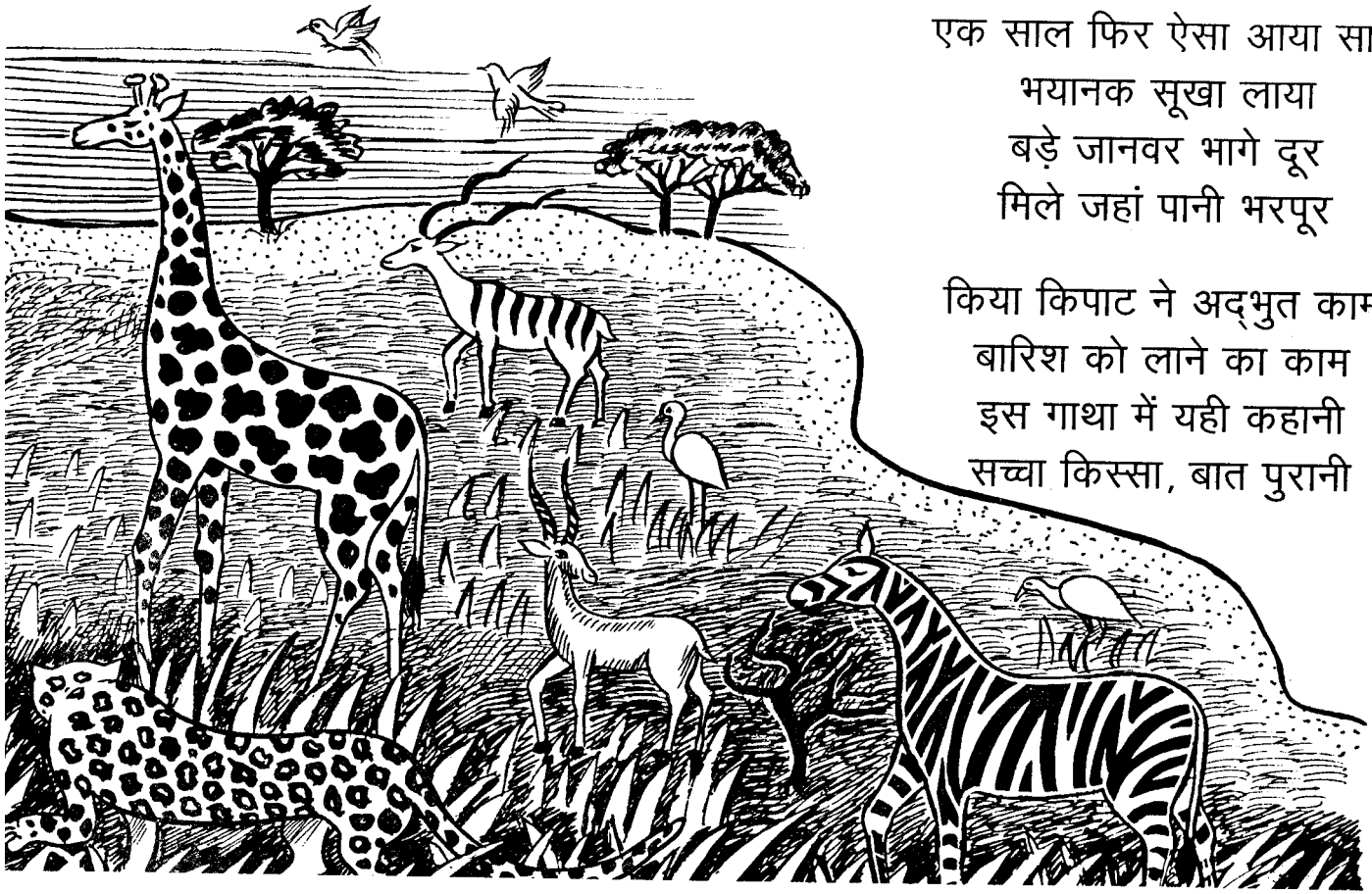

एक साल फिर ऐसा आया साथ
भयानक सूखा लाया
बड़े जानवर भागे दूर
मिले जहां पानी भरपूर

किया किपाट ने अद्‌भुत काम
बारिश को लाने का काम
इस गाथा में यही कहानी
सच्चा किस्सा, बात पुरानी

दूर वहां बादल मौज़ूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौज़ूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

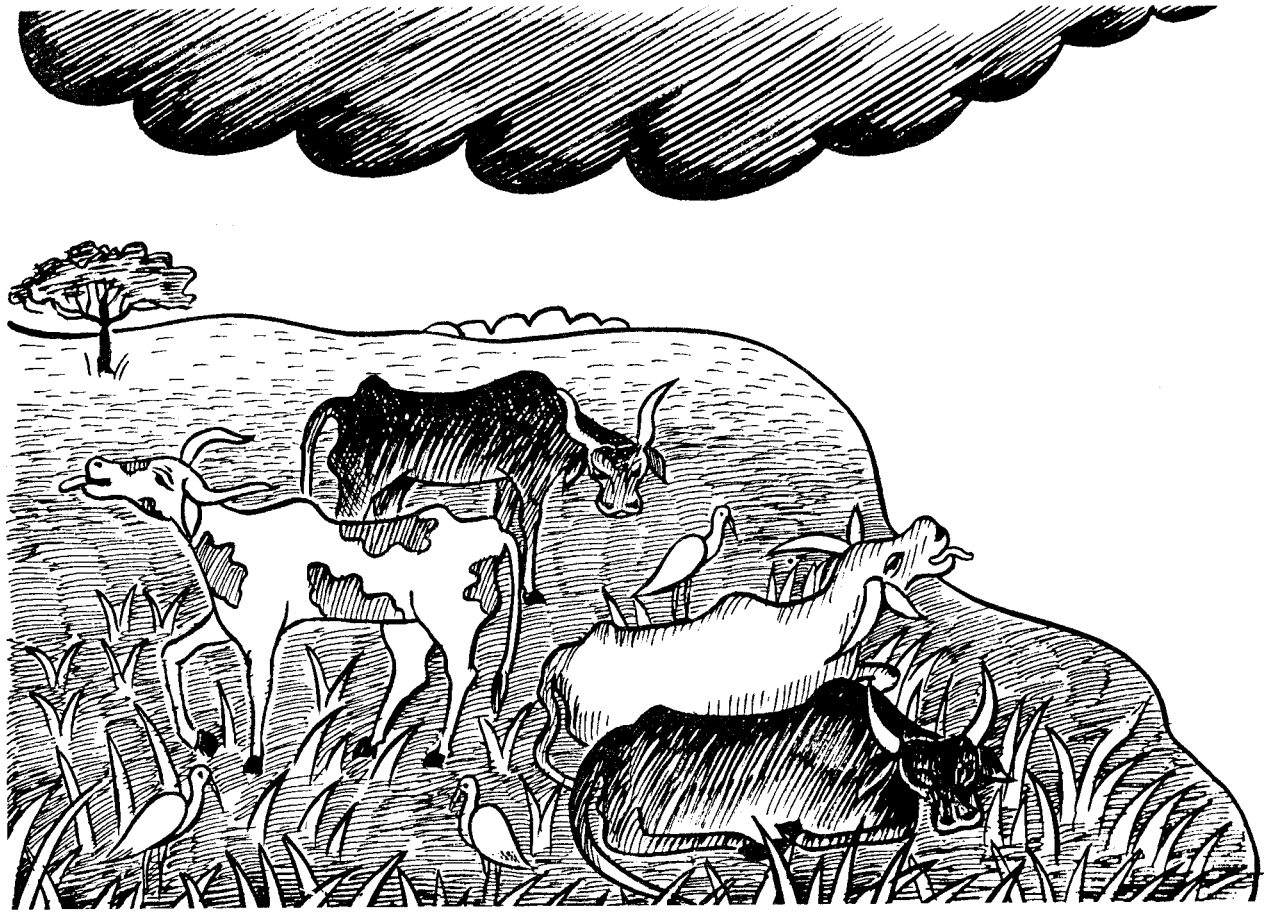

गायें सारी भूखी–प्यासी
दर–दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

पानी जब टप–टप बरसेगा
वही घास को हरा करेगा
तभी घास से भूख मिटेगी
तभी बूंद से प्यास बुझेगी

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौज़ूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

दूर खड़ा है एक पैर पर
डंडा लेकर वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला–हाट

गायें सारी भूखी–प्यासी
दर–दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

पानी जब टप–टप बरसेगा
वही घास को हरा करेगा
तभी घास से भूख मिटेगी
तभी बूंद से प्यास बुझेगी

दूर वहां बादल मौज़ूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

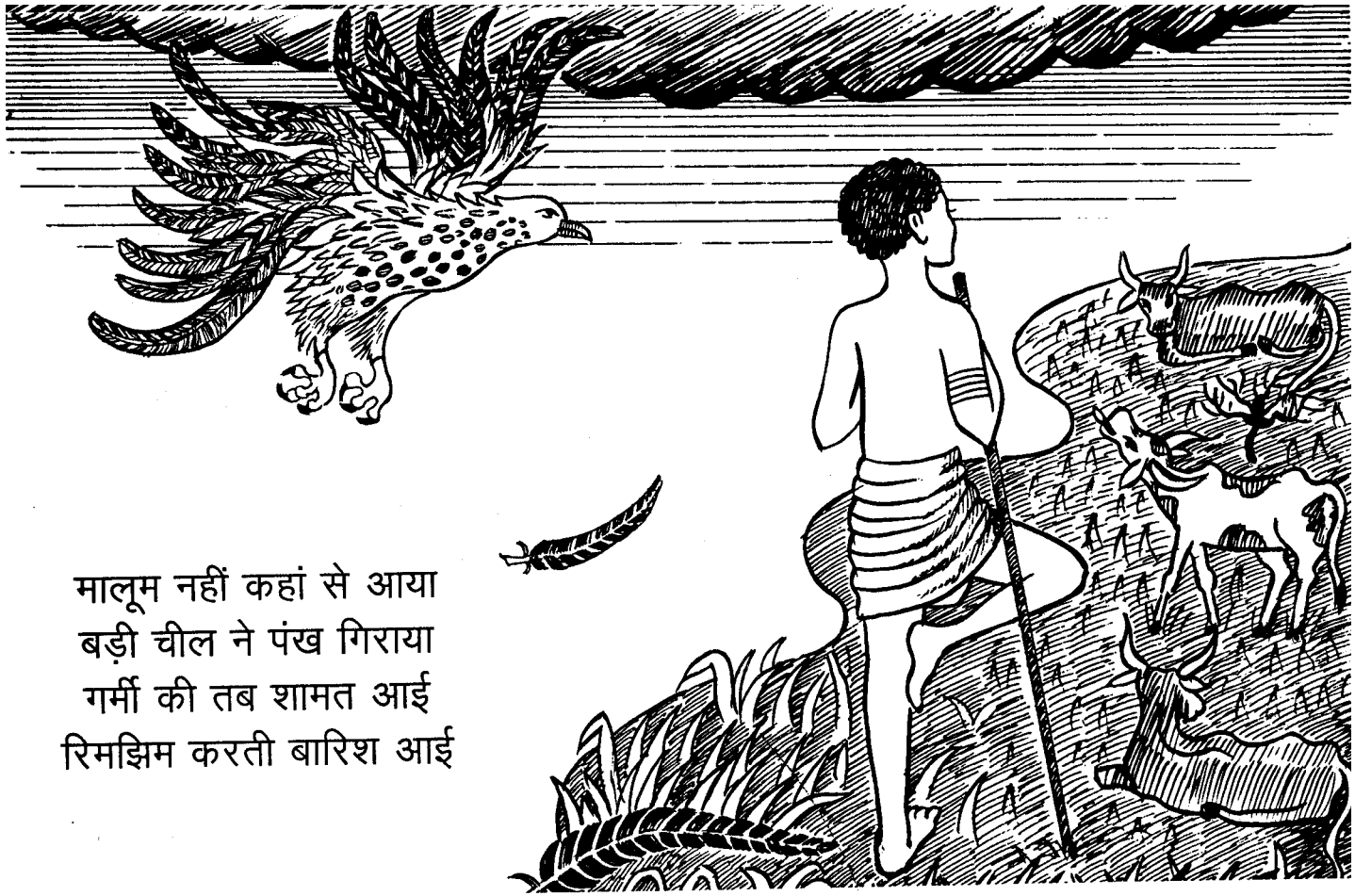

मालूम नहीं कहां से आया
बड़ी चील ने पंख गिराया
गर्मी की तब शामत आई
रिमझिम करती बारिश आई

पंख गिरा पैरों के पास
जहां खड़ा था वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला–हाट

गायें सारी भूखी–प्यासी
दर–दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौज़ूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

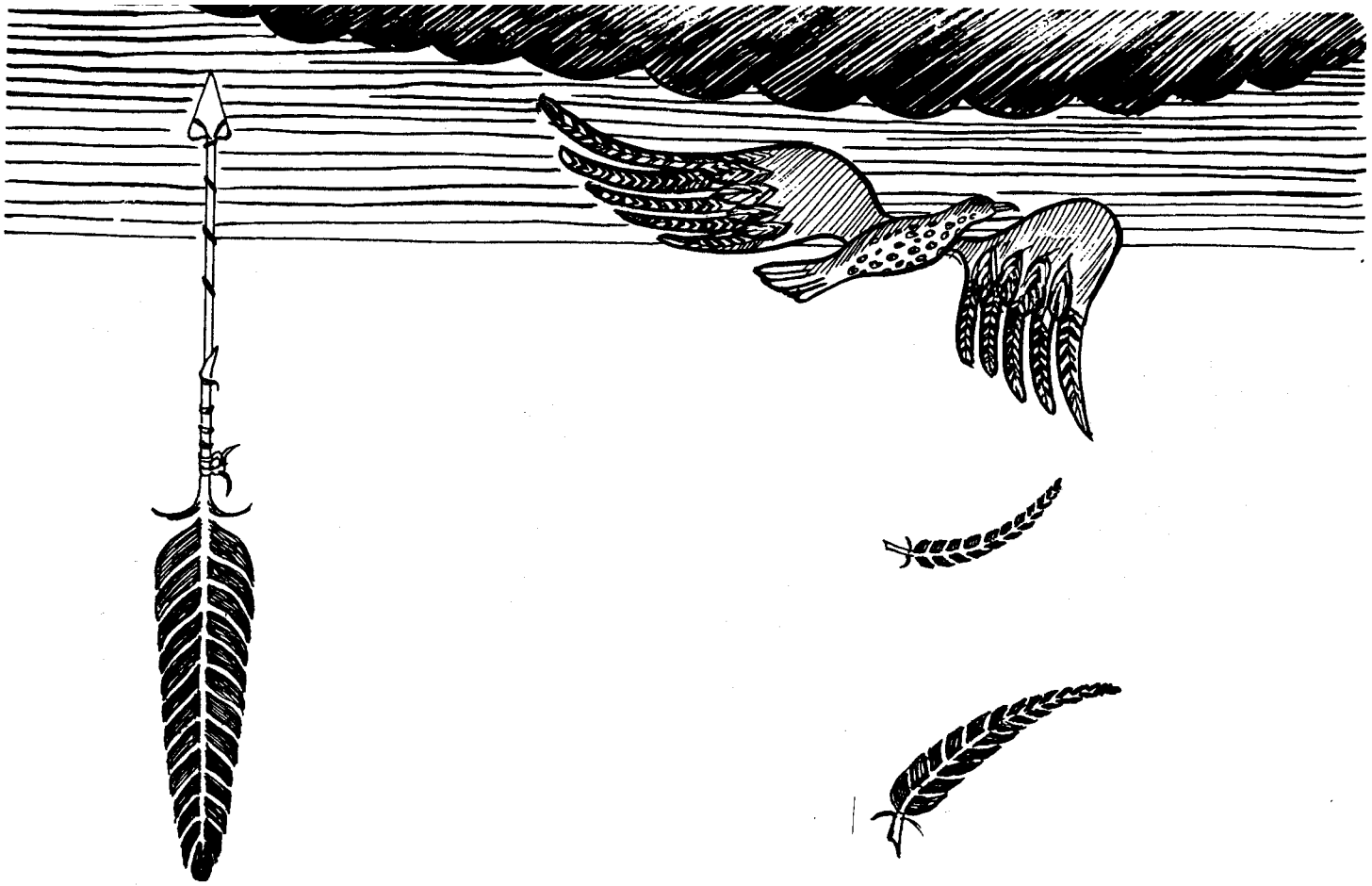

फिर किपाट ने पंख उठाया
एक सींक पर उसे जमाया
जोड़ी दोनों की जब काया
सुंदर एक तीर तब पाया

पंख गिरा पैरों के पास
जहां खड़ा था वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला–हाट

दूर खड़ा है एक पैर पर
डंडा लेकर वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला–हाट

गायें सारी भूखी–प्यासी
दर–दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौज़ूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

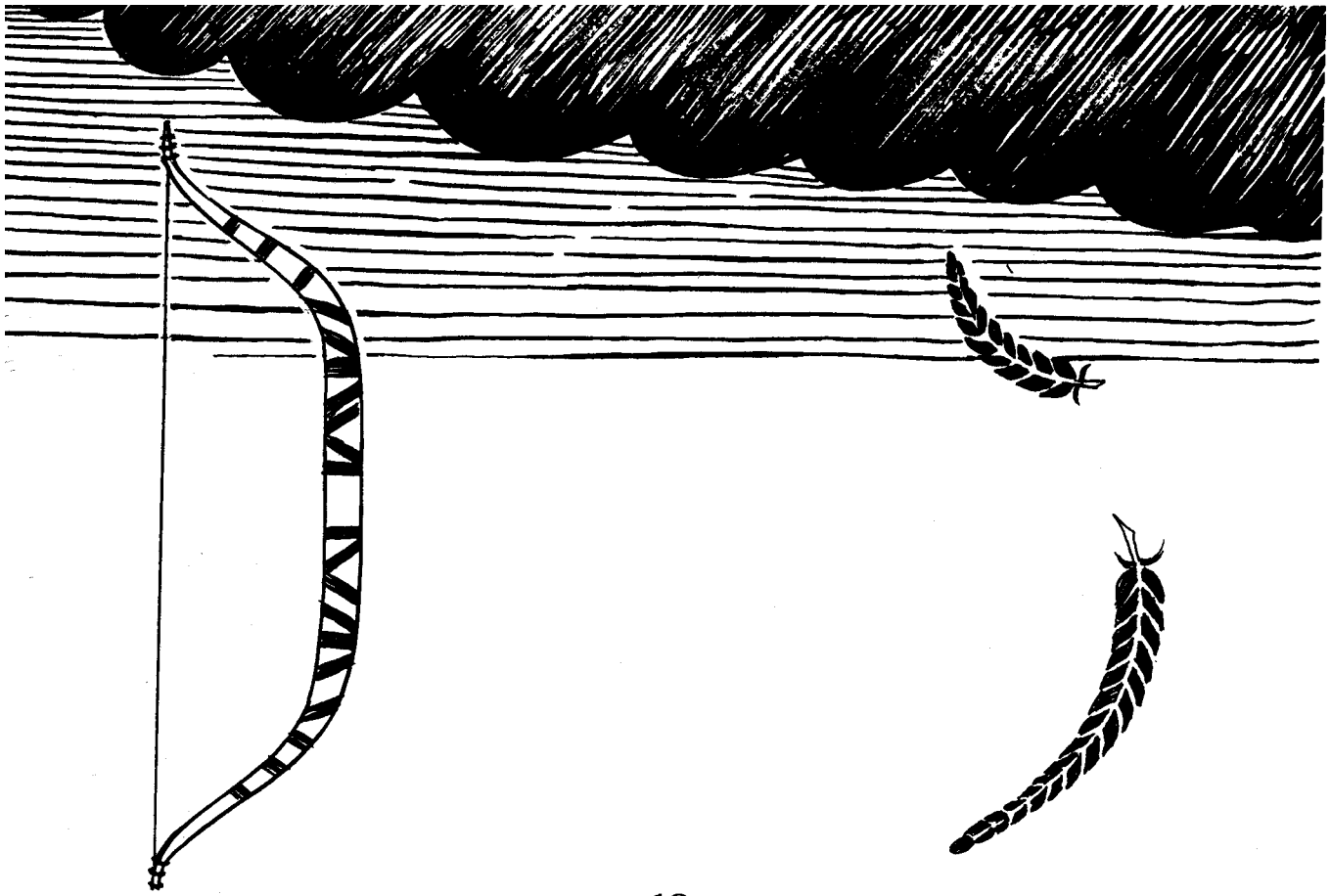

यह वो आलीशान कमान
भारी लकड़ी ऊंचो मान
मोटी डोरी इसकी शान
काटे बड़े–बड़ों के क़ान

फिर किपाट ने पंख उठाया
एक सींक पर उसे ज़माया
जोड़ी दोनों की जब़ काया
सुंदर एक तीर तब पाया

मालूम नहीं कहां से आया
बड़ी चील ने पंख गिराया
गर्मी की तब शामत आई
रिमझिम करती बारिश आई

पंख गिरा पैरों के पास
जहां खड़ा था वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला–हाट

गायें सारी भूखी–प्यासी
दर–दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौज़ूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

जब तीर से बनी कमान
फूटे दिल में सौ अरमान
सींक–पंख का सुंदर तीर
जिसे चलाए किपाट वीर

जब किपाट हो गया अधीर
तब उसने छोड़ा वो तीर तीर
गया बादल को भेद
हो गया उसमें बड़ा सा छेद

बिजली कड़के बादल गरजे
बूंदे टप–टप टप–टप बरसे
मिट्टी की तब प्यास बुझी
सूखी घास तब हुई हरी

यह वो आलीशान कमान
भारी लकड़ी ऊंची मान
मोटी डोरी इसकी शान
काटे बड़े–बड़ों के कान

फिर किपाट ने पंख उठाया
एक सींक पर उसे जमाया
जोड़ी दोनों की जब काया
सुंदर एक तीर तब पाया

मालूम नहीं कहां से आया
बड़ी चील ने पंख गिराया
गर्मी की तब शामत आई
रिमझिम करती बारिश आई

दूर खड़ा है एक पैर पर
डंडा लेकर वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला–हाट

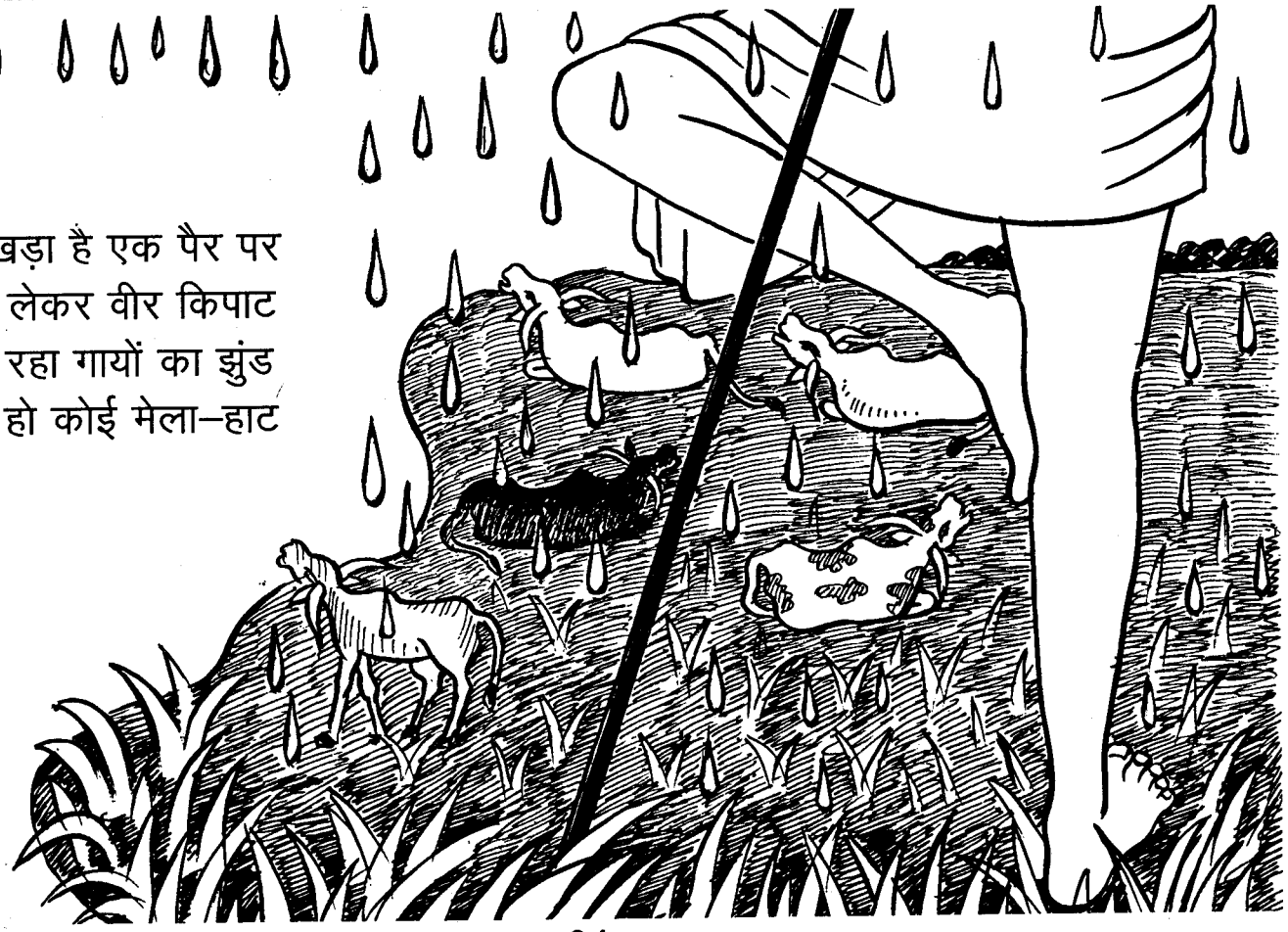

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौज़ूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

गायें सारी भूखी–प्यासी
दर–दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

पानी जब टप–टप बरसेगा
वही घास को हरा करेगा
तभी घास से भूख मिटेगी
तभी बूंद से प्यास बुझेगी

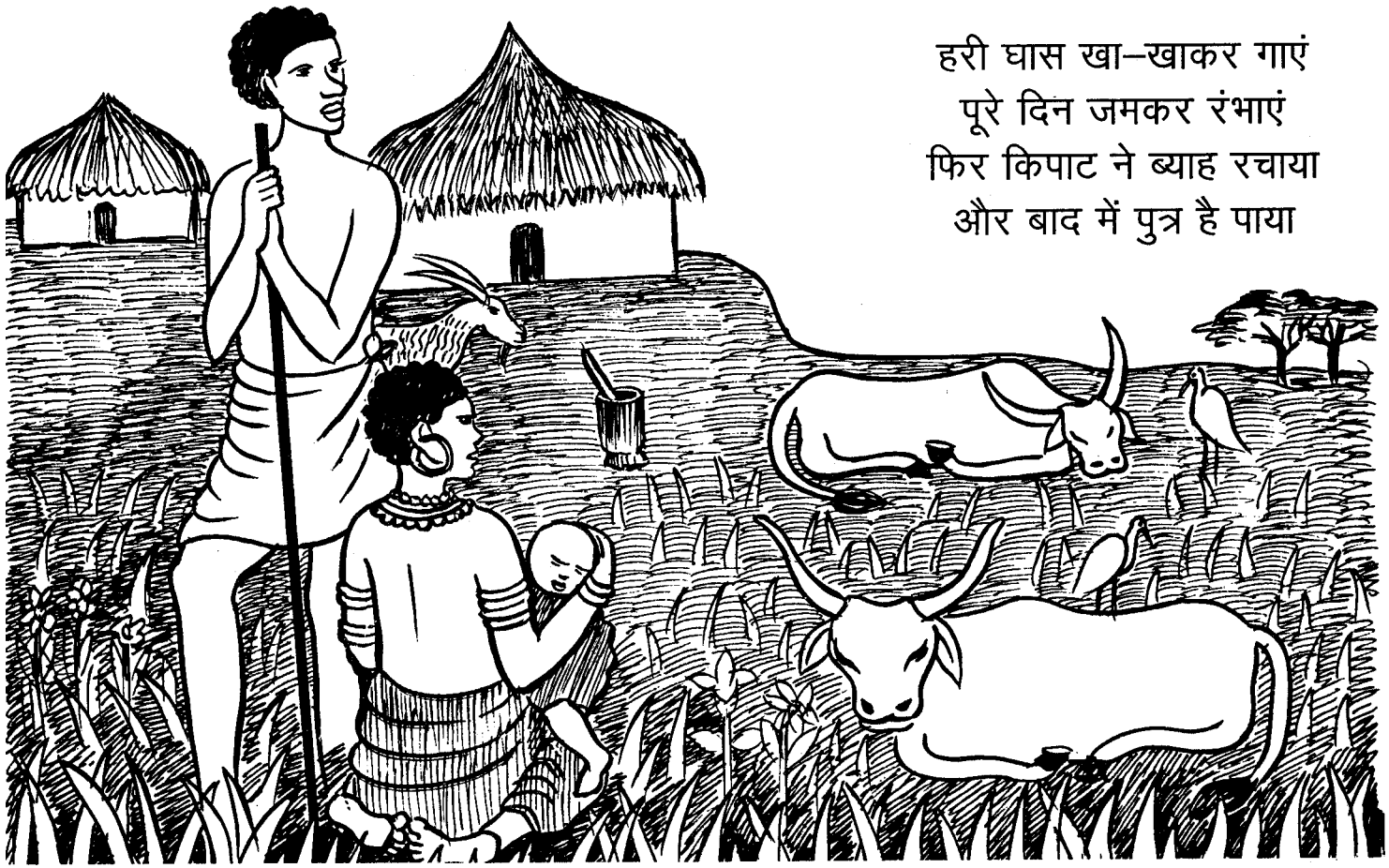

हरी घास खा–खाकर गाएं
पूरे दिन जमकर रंभाएं
फिर किपाट ने ब्याह रचाया
और बाद में पुत्र है पाया

अब किपाट का छोटा लड़का
करता है रखवाली
वो बादल को तीर मारकर
लाता है हरियाली।

❐❐

एक अफ्रीकी लोककथा का छंदों में रूपांतरण। एक बार अफ्रीका के जंगलों में भयानक सूखा पड़ता है। घास सूख जाती है। मवेशी मरने लगते हैं और सभी ओर त्राहि–त्राहि मच जाती है। तब वीर किपाट एक तीर चलाकर काले बादलों में छेद करता है और उनसे रिमझिम करती हुई बारिश आती है जिससे घास हरी–भरी हो जाती है और खुशहाली छा जाती है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 15 रुपये B - 47